8-3-67 ओम शान्ती रात्री क्लास

बच्चे जानते है कि कल त्रिमूर्ती शिव जयन्ती है। क्या त्रिमूर्ती शिव जयन्ती मनावेंगे वा सिर्फ शिव जयन्ती ही मनावेंगे? यह भी किसको पता नही है कि लक्ष्मी नारायण विष्णु के दो रूप है। नारायण जयन्ती तो मनाते नही है। बाकी लक्ष्मी जयन्ती मनाते है। जिसको ही दीप माला कहा जाता है। उसमें वास्तव में दोनो इकट्ठे है तब ही महालक्ष्मी कहते है। दो भुजा लक्ष्मी की दो नारायण की चार भुजाये हो गई विष्णु की। परन्तु पूजा फिर महालक्ष्मी की करते है। परन्तु वो दो वा चारभुजा का हिसाब नही रखते है। महालक्ष्मी कह देते है। अब लक्ष्मी वा महालक्ष्मी बात तो एक ही है। इसलिये ही महालक्ष्मी कहना अच्छा है। लक्ष्मी नाम कामन है बहुतों के नाम लक्ष्मी है। अब तुम बच्चों को वास्तव में त्रिमूर्ती शिव जयन्ती मनानी चाहिये। इन त्रिमूर्ती ब्र, वि, शं की भी मनानी चाहिये। बाप आकर ब्रह्मा दवारा स्थापना शंकर दवारा विनाश और विष्णु दवारा पालना कराते है। तो शिव के साथ इनकी भी जयन्ती मनानी चाहिये। कृष्ण की भी जयन्ती मनाते है। जगतअम्बा की मनाते है वा नही वो कह नही सकते है। काली की पूजा तो होती है। काली दुर्गा जगत-अम्बा बात तो एक ही है। नवरात्री में इनको मनाते है। तो तुमको त्रिमूर्ती शिव जयन्ती ही मनानी पड़े। चित्र भी त्रिमूर्ती शिव का देना पड़े। अब यह बाबा बैठे है यह स्टुडेन्ट है। यह सुहवा सखा भी होगा। प्रजापिता बाप भी हुआ। माताभी हुई। तो तुमको मातश्चपिता. . . तो यह महिमा शिवबाबा की हुई वा इनकी। समझने की बात है नां। इनको तो गाड फादर ही कहेंगे। फिर इनके आगे जाकर महिमा करते है कि (ल-न) तुम्ही हो माता पिता. . . अब इसमें समझकी बात है नां। यह और वो दोनो है इकट्ठे। अब तुम्हारे साथ खेलते है तो दोनो इकट्ठे हो जाते है। वो भी कहते है मै इन दवारा खेलता हूं। ऐसे नही कहेंगे कि मै इनके साथ खाता हूं। वो खाते नही है। वो तो अभोक्ता है रचना भी इनकी ही आत्मा को मिलती है। ब्रह्मा दवारा शिव बाबा से वर्सा मिलता है नई दुनियां का। तो जरूर ही है कि पुरानी दुनियां का विनाश ही होना चाहिये। अब विनाश कौन करे। शंकर को निमित्त बनाया है। वो भी कुछ करते नही है। यह ड्रामा में ही नूंध है। विनाश कराते है तो वो भी तो अच्छा है नां। बुलाते ही है कि आकर नई दुनिया में ले जाओ। तो शरीरों का जरूर विनाश करना पड़ेगा नां। इसलिये कहा जाता है शंकर दवारा विनाश। बाकी करता तो ना ही शंकर है ना ही शिव बाबा है। यह विनाश ही तो कल्याण कारी है। शंकर भी देवता है। वो हिंसा नही करते है। ड्रामा अनुसार पुराने शरीरों का विनाश होता है। यह शुभकारी है। पुराने शरीर छुड़ा कर आत्माओं को ले जाना अच्छा ही है नां। इसलिये ही पुकारते है कि बाबा आओ। हम आत्माये जो कि याद की यात्रा से प्योअर बन रही है-उनको ले जाओ। आत्माये चली जावेंगी बाकी शरीर यही खत्म हो जावेगा। इस महाभारी लड़ाई दवारा। फिर भी थोड़े रहते है: नही तो प्रलय हो जावे। बाप आते ही है संगम पर। नर्क से स्वर्ग बनाते है। जबकि मनुष्य पतित है तब ही बाप को बुलाते है। तो ब्रह्मा दवारा आकर सेपलिंग लगाते है आदी सनातन देवी देवता धर्म की। तुम अभी ब्राह्मण हो फिर देवता बनो। स्थापना हो जावेगी तो पुरानी दुनियां का विनाश हो जावेगा। बाप आते ही है संगम पर। ऐसे नही कि जब प्रलय होती है तब बाप आते है। ना प्रलय होती है नां ही पीपल के पत्ते पर कृष्ण ही आता है। यह है कल्याण कारी पुरूषोतम संगम युग। बच्चे जानते है कि हम संगम युगी है। बाकी मनुष्य है कलियुग में। ब्रह्मा की रात सो भी ब्राह्मणों की रात है। एक की ही रात थोड़ेई हो सकती है। इस समय रात पूरी होकर फिर दिन शुरू होता है। दिन प्रति दिन आत्मा और परमात्मा का परिचय देनी की पुआइन्टस देते रहते है। ओम

सूचना।—— त्रिमूर्ती शिव जयन्ती के शुभ अवसर पर भेजी हुई तार सभी की पाई है जी। और सब सेन्टरस का सर्विस समाचार भी पाया है। विदाई